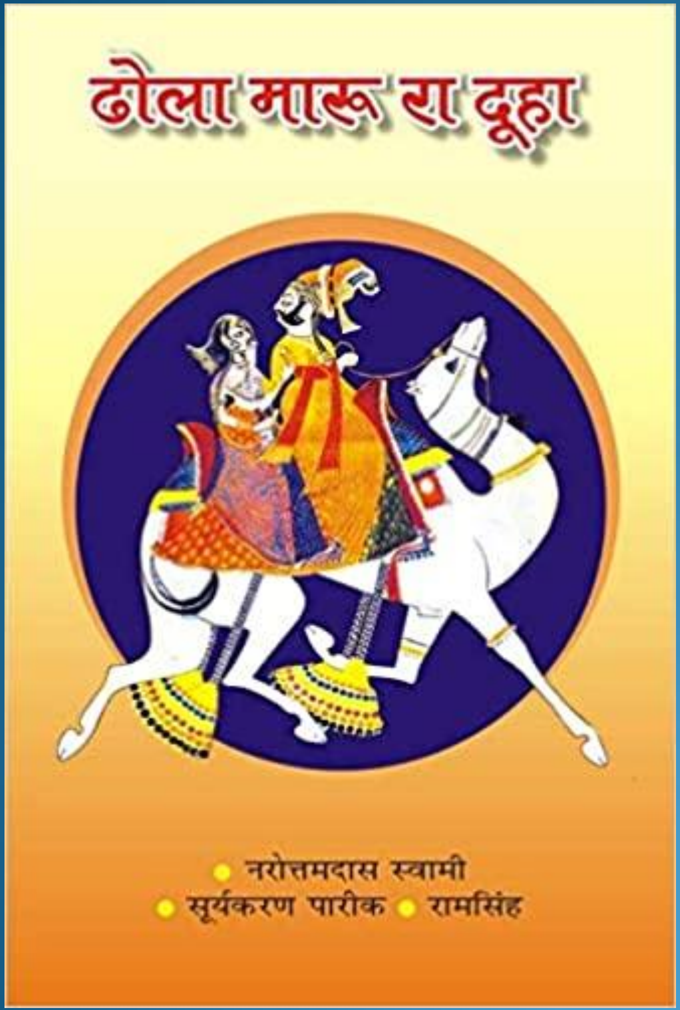

ढोला मारू रा दूहा

(दोहा 141 से 145)

डॉ. नवीन नंदवाना
हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)

मारवणी का संदेश - 141

कागळ नहीं, क मसि नहीं, लिखताँ आळस थाइ।

कह उण देस सँदेसड़ा, मोलइ वड़इ विकाइ।।१४१

भाव-

कागज नहीं है या स्याही नहीं है या लिखते हुए आलस्य होता है। या उस देश में सँदेशें बड़े मूल्य पर बिकते हैं।

मारवणी का संदेश - 142

वायस वीजउ नामँ, ते आगलि लल्लउ ठवइ।

जइ तू हुई सुजाँड, तउ तूँ वहिलउ मोकळे।।१४२

भाव-

वायस का जो दूसरा नाम (अर्थात काग) है उसके आगे लकार रखकर—अर्थात कागल(पत्र)—यदि तुम सुजान हो तो तुरंत भेज देना।

मारवणी का संदेश - 143

सँदेसउ जिन पाठवइ, मरिस्यउँ हीया फूटि।

पारेवाका झूल जिउँ, पड़िनइँ आँगणि त्रूटि।।१४३

भाव-

(निठुर) सँदेसा भी नहीं भेजते ; मैं हृदय फटकर मर जाऊँगी, कबूतर का झूला जैसे आँगन में गिरकर टूट जाता है।

मारवणी का संदेश - 143

संदेसा मति मोकळउ, प्रीतम तूँ आवेस।

आँगुलड़ी ही गळि गयाँ, नयण न वाँचण देस।।१४४

भाव-

हे प्रियतम, सँदेसा मत भेजो, तुम्हीं आ जाओ। मेरी अंगुलियाँ भी गल गई हैं और मेरी आँखें मुझे बाँचने नहीं देती।

मारवणी का संदेश - 144

संदेसा मति मोकळउ, प्रीतम तूँ आवेस।

आँगुळड़ी ही गळि गयाँ, नयण न वाँचण देस।।१४४

भाव-

हे प्रियतम, सँदेसा मत भेजो, तुम्हीं आ जाओ। मेरी अंगुलियाँ भी गल गई हैं और मेरी आँखें मुझे बाँचने नहीं देती।

मारवणी का संदेश - 145

फागुण मसि वसंत रुत, आयउ जइ न सुणेसि।

चाचरिकइ मिस खेलती, होळी इणबेसि।।१४५

भाव—

बसंत ऋतु के फाल्गुन मास में यदि मैं तुमको आया नहीं सुनूँगी तो चर्चरी नृत्य के मिस खेलती हुई होली की ज्वाला में फाँद पड़ूँगी।।